अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2020) दिनांक : 17-12-2020

समय सीमा : 3 घंटा द्वितीय वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

(जैन तत्त्व प्रवेश) प्रथम खण्ड–30

प्र. 1 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 15

(क) दृष्टांत द्वार-आश्रव व संवर का पूर्ण वर्णन करें।

(ख) आश्रव, संवर निर्जरा, अजीव व पुद्गल के द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव और गुण का वर्णन करें।

(ग) भाव को परिभाषित करते हुए घाति कर्मों के क्षयोपशम से होने वाली जीव की अवस्थाओं को वर्णित करें।

(घ) सामान्य गुण को परिभाषित करते हुए उसके भेदों की व्याख्या करें।

प्र. 2 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखें– 15

(क) रूपी-अरूपी द्वार

(ख) हेय ज्ञेय उपादेय द्वार

(ग) परमात्म द्वार

(घ) पारिणामिक भाव को परिभाषित करते हुए अंत तक लिखें।

(ङ) विस्तार द्वार–आश्रव एवं संवर के भेद व्याख्या सहित लिखें।

(च) नौ तत्त्व द्वार–अंतिम पांच भेदों के नाम व्याख्या सहित लिखें।

(छ) दृष्टांत द्वार–जीव-अजीव तत्त्व की व्याख्या दृष्टांत द्वार के आधार पर करें।

प्रतिक्रमण–20

प्र. 3 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 15

(क) प्रायश्चित सूत्र

(ख) ईर्यापथिक सूत्र

(ग) सूत्र सहित पौधधोपवाष व्रत लिखें।

(घ) सूत्र सहित पांचवां अणुव्रत लिखें।

प्र. 4 किन्हीं पांच प्रश्नों के अति संक्षिप्त उत्तर लिखें– 5

(क) यति विपर्यय का अर्थ लिखें।

(ख) अभ्याख्यान शब्द का क्या तात्पर्य है?

(ग) वनस्पति की जीवयोनि लिखें।

(घ) दूसरा नमोत्थुणं किसके प्रति है?

(ङ) कायोत्सर्ग संकल्प सूत्र लिखें।

(च) लंचा ग्रहण शब्द का अर्थ बताएं।

कर्म-प्रकृति–25

प्र. 5 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 9

(क) विहायो गति नाम कर्म के बारे में लिखें।

(ख) कर्म के विपाकोदय में कार्यकारी निमित्तों को लिखें।

(ग) गोत्र कर्म की परिभाषा लिखते हुए उच्च गोत्र कर्म भोगने के हेतु लिखें।

(घ) दर्शनावरणीय कर्म की स्थिति अबाधाकाल एवं गुणस्थानों में अवस्थिति लिखें।

प्र. 6 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें– 16

(क) ज्ञानावरणीय कर्म भोगने के हेतु लिखें।

(ख) आयुष्य कर्म बंध के हेतु लिखें।

(ग) प्राण, भूत, जीव सत्व को समझाते हुए असातवेदनीय कर्म बंध के हेतु लिखें।

(घ) त्रस दशक की अंतिम आठ प्रकृतियों के विषय में लिखें।

(ङ) चारित्र मोह कर्म की प्रकृतियों की स्थिति लिखें तथा स्पष्ट करें कि उदय में आने के बाद इन प्रकृतियों का प्रभाव कितने समय तक रह सकता है?

(च) अंतराय कर्म को परिभाषित करते हुए उसकी उत्तर प्रकृतियों के विषय में लिखें।

गीतिका–कर्मों की संज्झाय–10

प्र. 7 कोई दो पद्य अर्थ सहित लिखें– 8

(क) देव दानव.....महा निबला रे।

(ख) सम्यक्त्व धारी.....किसका रे।

(ग) सुभूम.....राख्यो रे।

(घ) बत्तीस.....द्वार रे।

प्र. 8 किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 2

(क) चन्दनबाला के पिता का क्या नाम था?

(ख) चन्द्रमा कितनी कलाओं से युक्त होता है? गीतिका में सूर्य को कितनी किरणों वाला बताया गया है?

(ग) पांचों पांडव अपनी पत्नी.....को.....में हार गए। वे.....वर्ष तक वन में भिखारी की तरह भटकते रहे।

पूर्व-कंठस्थ-ज्ञान–15

प्र. 9 चार प्रश्नों के उत्तर दें (प्रत्येक खण्ड से एक प्रश्न का उत्तर दें) 12

(क) पच्चीस बोल–सतरहवां बोल ***अथवा*** दसवां बोल।

(ख) चतुर्भंगी–उन्नीसवां बोल ***अथवा*** सतरहवां बोल।

(ग) पच्चीस बोल की चर्चा–पन्द्रहवां बोल ***अथवा*** छठे गुणस्थान से ग्यारहवें गुणस्थान तक।

(घ) तत्त्व चर्चा–कर्म पर छह द्रव्य, नौ तत्त्व ***अथवा*** पुण्य, धर्म आदि एक या दो।

प्र. 10 कोई एक पद्य अर्थ सहित लिखें– 3

(क) दान शील.....लिगार।

(ख) हाथ जोड़ी.....बोसराई रे।